

1. झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका को कैसे सम्मोहित कर रहा था?

रात के अंधकार में गंतोक का दृश्य सितारों की हल्की-स्पष्ट रोशनी में नहाया हुआ था। यह दृश्य लेखिका को एक जादुई अनुभूति और आत्मिक शांति दे रहा था। उसे यह सब इतना आकर्षक और सम्मोहित कर देने वाला लग रहा था कि मानो उसका अस्तित्व उस प्रकृति के सौंदर्य में खो गया हो, चेतना शून्य हो गई थी। वह स्वयं को सुख की अतिन्द्रियता में डूबी महसूस करती है। उस रोशनी में नहाए शहर की छटा ने उसे जीवन की स्पंदनशीलता, सौंदर्य और अस्तित्व का बोध कराया—यह दृश्य उसकी आत्मा को परम आनंद की अनुभूति प्रदान कर रहा था।

2. गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया?

गंतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर इसीलिए कहा गया क्योंकि यहाँ के लोग बड़े परिश्रमी हैं। यहाँ पहाड़ी इलाकों में जीवन बहुत कठिन है—स्त्रियाँ, बच्चे और पुरुष सभी पहाड़ काटकर, पत्थर तोड़कर सड़कें बनाते हैं, चाय के बागानों में काम करते हैं, खेती करते हैं, पत्थर ढोते हैं। हर महिला अपने बच्चे को कपड़े में पीठ पर बांधकर साथ ले जाती है और काम करती है। बच्चों को सुबह स्कूल जाने के लिए कई किलोमीटर पहाड़ी रास्ता पार करना पड़ता है। भारी परिश्रम के बावजूद सभी जीवन के हर पल को सुंदरता और मेहनत से जीते हैं। उनकी यह मेहनत और आत्मगौरव, गंतोक को एक सपनों के बादशाहों के शहर के रूप में प्रस्तुत करता है।

3. श्वेत और रंगीन पताकाओं का फहराना किन अवसरों को दर्शाता है?

श्वेत पताकाएँ बौद्ध धर्म में शांति और अहिंसा की प्रतीक हैं, इन पर मंत्र लिखे होते हैं। जब कभी किसी बुद्धिस्त व्यक्ति की मृत्यु होती है, उसकी आत्मा की शांति के लिए 108 श्वेत पताकाएँ फहराई जाती हैं। रंगीन पताकाएँ नए कार्य, उत्सव या शुभ शुरुआत पर फहराई जाती हैं—वे सौभाग्य, अच्छे संकल्प, किसी नए सफर, नए पर्व या घर के नए काम की शुरुआत का प्रतीक हैं। इस तरह ये पताकाएँ शोक तथा नए कार्य या उत्सव की ओर संकेत करती हैं।

4. जितेन नार्गे ने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, भौगोलिक स्थिति एवं जनजीवन के बारे में क्या बताया?

नार्गे ने बताया: सिक्किम पहाड़ी, हरियाली, संकरे घुमावदार रास्तों और सुंदर घाटियों

वाला है। वहाँ पाइन-धूपी के नुकीले पेड़ दिखते हैं, जगह-जगह झरने-नदियाँ बहती हैं। भौगोलिक दृष्टि से यूमथांग घाटी फूलों से भरी है, कवी लोंग स्टॉक में गाइड फिल्म की शूटिंग हुई थी, हिमालय पर्वत पास है, रास्ते में सेवेन सिस्टर्स वाटरफॉल और कई खूबसूरत स्थल हैं। जनजीवन में लोग बहुत मेहनती हैं—महिलाएँ चाय-बागानों में काम करतीं, घर संभालतीं, पत्थर तोड़तीं, बच्चे बंधे रहते और स्कूल जाते हैं, जीवन कठिन है लेकिन सभी जुझारू और धर्म, लोकविश्वास, पारंपरिक आस्थाओं से बंधे हैं।

5. लोंग स्टॉक में घूमते धर्म चक्र को देखकर लेखिका को भारत की आत्मा एक-सी क्यों लगी?

लोंग स्टॉक का धर्म चक्र (जिसे घुमाने से पाप धुलते हैं) देखकर लेखिका को लगा कि मैदान से लेकर पहाड़ों तक, लोगों की मान्यताएँ, आस्थाएँ, पाप-पुण्य की अवधारणाएँ और धार्मिक कल्पनाएँ एक-सी हैं। जैसे मैदानी क्षेत्र में गंगा को पवित्र मानते हैं, वैसे ही यहाँ धर्म चक्र मान्यता है। तमाम वैज्ञानिक विकास के बावजूद सदियों पुरानी रूढ़ियाँ, आस्था, सामाजिक संस्कृति भारत की आत्मा को एक सूत्र में बाँधती है। यही गहराई देश की सांस्कृतिक एकता है।

6. एक कुशल गाइड के गुण:

नार्गे एक आदर्श गाइड था—पर्यटन स्थल की सम्पूर्ण जानकारी, भौगोलिक व ऐतिहासिक समझ, स्थानीय भाषा व संस्कृति की पहचान, न सिर्फ विज्ञान बल्कि लोकविश्वास तक में माहिर। कुशल गाइड को यात्रा के साथी की ज़रूरत, सुरक्षा, समय व मौसम का ध्यान रखना चाहिए, जिज्ञासा का समाधान करना चाहिए, अपने व्यवहार से सैलानियों को आत्मीयता का अहसास कराना चाहिए, प्रभावशाली तरीके से स्थल की विशेषता, प्राकृतिक और सांस्कृतिक रोचक तथ्य प्रस्तुत कर सके, ताकि पर्यटक धन्य महसूस करे। हर परिस्थिति में विनम्र, बुद्धिमान और जिम्मेदार होना चाहिए।

7. लेखिका ने हिमालय के कौन-कौन से रूप देखे?

हिमालय पल-पल रंग बदलता है—कभी हरे रंग की गहराई लेता है, तो कभी हल्का पीला, घाटियों में फूलों के रंग, कहीं पथरीला, दूर-दूर तक बर्फ-जड़ित पर्वत, बादलों का विशाल अंतहीन आवरण, दूध की धार-सी झरने, कहीं-कहीं बारिश के पर्दे, तो कहीं सूर्य की किरणों में चमकते बर्फ के पहाड़—इन सारे रूपों ने लेखिका को मंत्रमुग्ध कर दिया।

8. प्रकृति के अनंत-विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति होती है?

लेखिका प्रकृति के अनंत और विराट रूप को देखकर उसे अपने अंदर समेटने की उत्कंठा महसूस करती है। वह अनुभव करती है कि प्रकृति उसे चुपचाप जीवन के रहस्य सिखा रही है—वह जन-मानस, पर्वत, घाटी, झरने सब को भर-भर आँखों से देखती है और मानसिक शांति, आत्मिक आनंद व जीवन की शक्ति उसमें समा रही है। प्रकृति की निर्मलता, रहस्य, सौंदर्य व्यक्ति को नया बना देती है।

9. प्रकृति के सौंदर्य में मग्न लेखिका को कौन-से दृश्य झकझोर गए?

लेखिका प्रकृति का आनंद ले रही थी, पर जब उसने महिलाओं को कठिन श्रम करते, बच्चों को मीलों पैदल स्कूल जाते, काम में बच्चों को माँ की पीठ पर बंधा देखा—तब उसकी कविता-सी चेतना जीवन की वास्तविकता पहचान गई। चाय की पत्तियाँ चुनती बोकु पहने लड़कियाँ, श्रमिक पत्थर तोड़ती स्त्रियाँ, बच्चे काम में लगे—इन दृश्यों ने उसे झकझोर दिया।

10. सैलानियों को प्रकृति की छटा का अनुभव कराने में किन-किन लोगों का योगदान होता है?

सबसे महत्वपूर्ण कुशल गाइड—जो हर स्थल की पहचान, सुरक्षा, जानकारी और रोचकता से यात्रा को जीवंत बनाता है। यात्रियों के संरक्षक, साथी, स्थानीय जनजीवन, मार्गदर्शक—हर कोई सैलानी के अनुभव को अनमोल बनाता है। प्रकृति से जुड़े श्रमिक—जिनकी मेहनत से सड़कें, रास्ते, बागान तैयार होते हैं। सरकारी व प्रशासनिक व्यवस्थाएँ भी सहायक रहती हैं।

11. आम जनता की देश की आर्थिक प्रगति में भूमिका—‘कितना कम लेकर लौटाती कितनी अधिक’:

देश की आम जनता—मजदूर, श्रमिक, किसान—बहुत कम सुविधाएँ, कम वेतन और संघर्ष भरा जीवन जीकर भी समाज और देश को सड़क, बाँध, पुल, अन्न, वस्त्र, तमाम उत्पाद, सेवा, सुंदरता और संपन्नता प्रदान करती है। उनका श्रम ही देश की आर्थिक रीढ़, शक्ति और सफलता है। वे अपना जीवन कठिनाई में जीते हैं लेकिन समाज को सुविधाएँ, प्रगति और खुशहाली का उपहार देते हैं।

12. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ खिलवाड़, रोकने की भूमिका:

आज की पीढ़ी कारखानों का प्रदूषित जल, जंगलों की अंधाधुंध कटाई, नदियों की गंदगी, वायु प्रदूषण—प्रकृति के साथ बड़ा खिलवाड़ कर रही है। इसकी रोकथाम के लिए हमें जागरूक नागरिक बनकर पेड़ लगाना, प्रदूषण रोकना, जल-संरक्षण करना, उत्तरदायित्व को समझना चाहिए—सामूहिक अभियान, कानून का पालन, जन-जागरूकता बढ़ाना आवश्यक है।

13. प्रदूषण के दुष्परिणाम:

प्रदूषण से स्नोफॉल कम हुआ है, मौसम असामान्य हो गया—जहाँ ठंड होती थी वहाँ गर्मी, जल की कमी, बाढ़-सूखा, साँस व त्वचा की बीमारियाँ, नदियों का दूषित पानी—हर तरफ इसका दुष्प्रभाव है। शुद्ध पानी और वायु अब दुर्लभ हो गई है; पर्यावरणीय असंतुलन गंभीर संकट पैदा कर रहा है।

14. 'कटाओ' पर दुकान का न होना वरदान—कैसे?

'कटाओ' पर दुकानें नहीं हैं, इसलिए वह असली प्राकृतिक वातावरण लिए हुए है। यहाँ कोई गंदगी, भीड़-भाड़, शोर, प्रदूषण नहीं है—इसी वजह से वहाँ असली स्नोफॉल और मनोहारी दृश्य दिखता है। यदि दुकानें आ जातीं तो पर्यटन ने इसे प्रदूषित कर दिया होता।

15. प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था कैसे की है?

प्रकृति पर्वतीय इलाकों में सर्दियों में बर्फ के रूप में जल संचित रखती है, गर्मियों में वही बर्फ पिघलकर नदियों को जीवन देती है—ऊँचे पर्वत जल के भंडार हैं, जिसे धीरे-धीरे प्रकृति उपयोग के लिए बहा देती है।

16. देश की सीमा पर बैठे फौजी किन कठिनाइयों से जूझते हैं—हमारा कर्तव्य:

सीमा पर फौजी कठोर सर्दी-गर्मी, हिमालय की बर्फ में -15°C तापमान, कठिन भूख-प्यास, अकेलेपन व हर पल मौत के जोखिम में रहते हैं—राष्ट्र की सुरक्षा, हमारी नींद, सुख-चैन के लिए। उनके कृतज्ञता, सम्मान, मदद, परिवार के साथ सहयोग, उनकी सेवा हेतु इच्छा, सुरक्षा और संवेदना हमारा कर्तव्य है—देशवासियों को उनका त्याग कभी भूलना नहीं चाहिए।



MATRIX
STUDIES